RNI No. 20281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2018-20

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 75, अंक : 4 एक प्रति 2 : रुपये
रविवार 8 अप्रैल, 2018
विक्रमी सम्वत् 2075, सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये
दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–75, अंक : 4, 5–8 अप्रैल 2018 तदनुसार 26 चैत्र सम्वत् 2075 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः

ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

हयो न विद्वाँ अयुजि स्वयं धुरि तां वहामि प्रतरणीमवस्युवम्।
नास्या वश्मि विमुचं नावृतं पुनर्विद्वान्पथः पुरएत ऋजु नेषति।।

–ऋ. ५।४६।१

शब्दार्थ–विद्वान् = जान–बूझकर मैं **हयो+न** = घोड़े की भाँति **धुरि** = धुरे = जुए में **स्वयं** = स्वयं, अपने–आप **अयुजि** = जुड़ा हूँ **ताम्** = उस **प्रतरणीम्** = पार उतारने वाले **अवस्युवम्** = रक्षा करने वाले धुरे को **वहामि** = वहन कर रहा हूँ, चला रहा हूँ। **न** = न तो **अस्याः** = इससे **विमुचम्** = छुटकारा **वश्मि** = चाहता हूँ और **न** = न ही इससे पुनः पुनः **आवृतम्** = लौटना चाहता हूँ। **पथः** = मार्ग का **विद्वान्** = जानने वाला **पुरएतः** = हमारा नेता **ऋजु** = सीधा **नेषति** = ले–चलेगा।

व्याख्या–मनुष्य–जीवन की सफलता इसकी कार्यतत्परता में है। वेद सङ्केत करता है कि मनुष्य को जीवन–कार्य में ऐसे जुट जाना चाहिए जैसे कि घोड़ा रथ के जुए में जुट जाता है। एक भेद अवश्य है कि घोड़ा अपनी इच्छा के विरुद्ध रथ में जोड़ा जाता है, किन्तु मनुष्य को स्वयं कार्य में जुटना चाहिए, जैसाकि वेद कह रहा है–**'हयो न विद्वाँ अयुजि स्वयं धुरि'** घोड़े की भाँति धुरे में स्वयं जुड़ा हूँ। इसका भाव यह है कि मनुष्य को अपने जीवन का लक्ष्य, जीवन का उद्देश्य स्वयं निर्धारित करना होगा दूसरा नहीं कर सकता। कोई भी मनुष्य–योग्य–से–योग्य मनुष्य–दूसरे के मन की भावनाओं को, हृदय की तरङ्गों को, चित्त की उमङ्गों को भली–भाँति नहीं जान सकता। दूसरा मनुष्य निर्धारित उद्देश्य की सिद्धि के लिए कुछ साधनों का निर्देश कर सकता है, किन्तु जीवन–लक्ष्य का निर्धारण करना उसके सामर्थ्य से बाहर है। अतएव वेद 'स्वयं' शब्द का प्रयोग करता है।

इसका एक और भाव भी है **'स्वयं यजस्व स्वयं जुषस्व'** (यजुः० २३।१५) = स्वयं कर्म कर और स्वयं फल खा। धुरे में स्वयं जुड़ेगा, तो फल भी तुझे ही मिलेगा। धुरा धारण करना, भार वहन करना थोड़ा–बहुत कष्ट का हेतु अवश्य होता है, किन्तु मनुष्य–जीवन का धुरा **प्रतरणी** और **अवस्यु** है, पार लगाने वाला तथा रक्षा का साधन है। पार लगाने वाले और रक्षा करने वाले का त्याग करना मूर्खता की बात है।

'श्रेयांसि बहु विघ्नानि' = भले कार्यों में अनेक विघ्न आते हैं। संसार में जो अधम पुरुष हैं, वे तो विघ्नों के भय से कार्य का आरम्भ ही नहीं करते। मध्यम पुरुष विघ्नों से हत होकर **'विरमन्ति मध्ये'** बीच में छोड़ देते हैं, किन्तु उत्तम पुरुष विघ्नों से बार–बार मार खाकर भी प्रारम्भ किये कार्य को नहीं छोड़ते। यही बात वहाँ कही है–**'नास्या वश्मि विमुचं नावृतं पुनः'** = न ही मैं इससे छुटकारा चाहता हूँ और न ही इससे फिर वापस आना। जब एक कार्य को सोच–समझकर, उसके पक्ष–प्रतिपक्ष की सारी बातें सोचकर उसे न्याययुक्त उचित समझकर अङ्गीकार किया, तो पुनः उसके त्यागने का कोई अर्थ ही नहीं। सज्जन पुरुषों की पहचान ही यह है कि वे अङ्गीकृत का त्याग नहीं करते। किसी नीतिकार ने अतीव सुन्दर शब्दों में कहा है–

न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।

–भर्तृहरि, नीतिशतक; ७४

न्याययुक्त मार्ग से, धीर लोग एक पग भी विचलित नहीं होते। उत्तम कर्मों का अध्यक्ष भगवान् है, वह पूर्ण विद्वान् है, अतः वह **'विद्वान् पथः पुरएत ऋजु नेषति'** मार्गज्ञाता, नेता सीधे मार्ग से ले–जाता है, अर्थात् भगवान् सभी विघ्नों का विनाश करते हैं, अतः विघ्नों से डरकर सत्य मार्ग का त्याग नहीं करना चाहिए।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

इन्द्रस्य कर्म सुकृता पुरूणि व्रतानि देवा न मिनन्ति विश्वे।
दाधार यः पृथिवीं द्यामुतेमां जजान सूर्य्यमुषसं सुदंसाः।।

–ऋ० ३.३२.८

भावार्थ–सर्वशक्तिमान् इन्द्र के नियम बद्ध, अनन्त, श्रेष्ठ कर्म हैं, जिनको बड़े–बड़े विद्वान् भी नहीं जान सकते। जिस प्रभु ने, इस सारी पृथिवी को और ऊपर के द्युलोक को उत्पन्न करके धारण किया है, और उसी उत्तम कर्मों वाले जगत्पति परमात्मा ने, इस तेजोराशि सूर्य को तथा प्रभात को उत्पन्न किया है। मनुष्यों को कैसे भी नियमबद्ध कर्म क्यों न हों, इनका उलट–पुलट होना हम देख रहे हैं, परन्तु उस जगदीश के अटल नियमों को कोई तोड़ नहीं सकता है।

मृत्योः पदं योपयन्तो यदैत द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः।
आप्यायमानाः प्रजया धनेन शुद्धाः पूता भवत यज्ञियासः।।

–ऋ० १०.१८.२

भावार्थ–परम दयालु जगदीश का उपदेश है–कि मेरे प्यारे पुत्रो! आप लोग मृत्यु के पाँव, दुराचार और मन की अपवित्रता को परे हटाते हुए, सत्संग सदाचार ब्रह्मचर्य और वेदों के स्वाध्यायादि साधनों से, अपनी आयु को बढ़ाते हुए मेरे मार्ग पर आओ। मेरी अनन्य भक्ति, आप लोगों को अन्दर बाहर से शुद्ध करती हुई, प्रजा धनादिकों से सन्तुष्ट करके पूजनीय बनाएगी।

सहस्त्रं साकमर्चत परिष्टोभत विशतिः।
शतैनमन्वनोनवुरिन्द्राय ब्रह्मोद्यतमर्चन्ननु स्वराज्यम्।।

–ऋ० १.८०.९

भावार्थ–हे मुमुक्षु पुरुषो! आप हज़ार इकट्ठे होकर इन्द्र भगवान् की स्तुति करो, बीस इकट्ठे होकर स्तोत्र उच्चारण करो, इसकी सैकड़ों ने वारंवार स्तुति की है। ऋषि महात्माओं ने मन्त्ररूप स्तुति की ध्वनि को ऊपर उठाया है। वह इन्द्र भगवान् अपने राज्य को प्रकाशित करता हुआ विराजमान है। जो विदेशी लोग कहा करते हैं कि भारतवासी मिलकर बैठना और मिलकर प्रभु की प्रार्थना करना जानते ही नहीं, उनको चाहिये कि इस मन्त्र को देखें। हमारे महर्षि लोग, जो वेदों का अभ्यास करते थे, वे सब इस बात को जानते थे। एकान्त वनों में बैठकर उपासना करते, सभा–समाजों में भी आते, इकट्ठे बैठकर प्रभु प्रार्थना करते–कराते थे।

बाल-संस्कार

ले.-यशपाल सोन्धी चण्डीगढ़

'संस्कारो हि गुणान्तराधानमुच्यते' अर्थात् संस्कार पहले से विद्यमान दुर्गुणों को हटाकर उनकी जगह सद्गुणों का आधान बना देने का नाम है। -चरक ऋषि

बच्चों पर निवेश करने की सबसे अच्छी चीज है अपना समय और अच्छे संस्कार। एक श्रेष्ठ बालक का निर्माण सौ विद्यालयों को बनाने से बेहतर है।

-स्वामी विवेकानन्द जी

संस्कार हमारे देश की पहचान है और इस धरोहर को हमारे ऋषियों मुनियों ने मानव जीवन को उन्नत एवं समर्थ बनाने हेतु सदियों से सहेज रखा है। संस्कारों के माध्यम से मानव की मनोवृत्ति, स्वभाव, आचार-विचार, आस्था, आध्यात्म को निर्मल एवं सुदृढ़ बनाने की चेष्ठा की जाती है। शारीरिक, मानसिक व आत्मिक शक्तियों का विकास संस्कारों का मुख्य उद्देश्य है। संस्कार केवल एक दिन में अर्जित नहीं किये जा सकते अथवा ऐसा भी नहीं है कि जब चाहे आवश्यकतानुसार इन्हें समय-समय पर ग्रहण किया जा सके। यह निरन्तर अभ्यास एवं अनुसरण की प्रक्रिया है जिसकी नींव बचपन में ही डाली जा सकती है। गीली मिट्टी को जैसे कुम्हार मनचाहा रूप दे सकता है ठीक वैसे ही प्रत्येक माता-पिता का मुख्य उद्देश्य अपने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य हेतु जीवन-जीने की कला, तौर-तरीकों, प्रमाणित सिद्धान्तों व आधुनिक मूल्यों का ज्ञान बच्चों की बढ़ती आयु के साथ-साथ विभिन्न माध्यमों से समझाना और उनकी विशेषता बताना है ताकि वे जीवन के विभिन्न पहलुओं को अच्छी तरह समझ सकें और चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में उचित निर्णय लेने के लिए सक्षम बन सकें। सुदृढ़ आधार-शिला बनाने के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण मूल्य एवं तत्व इस प्रकार है:

1. **आत्मविश्वास:** आधुनिक भौतिक प्रधान युग एवं बदलते हुए सामाजिक वातावरण में मनुष्य अपने अस्तित्व एवं वास्तविक उद्देश्यों से भटक रहा है। इसी कारण चुनौतियाँ भीष्म रूप धारे मनुष्य के प्रमुख खड़ी है। ऐसी परिस्थितियों से निपटने के लिए साहस व धैर्य की अति आवश्यकता है। इसलिए प्रत्येक माता-पिता को बच्चों में अटूट विश्वास पैदा करना होगा ताकि वे अपने दम पर हर मुश्किल का सामना कर सकें और किसी भी परिस्थिति में किसी प्रकार की चुनौती स्वीकार कर सकें।

2. **कर्मठ:** किसी भी कार्य को सफलता पूर्वक करने के लिए एकाग्रता, क्षमता एवं कर्मठता का होना बहुत जरूरी है। इनके अभाव में मानसिक शक्तियां किसी भी कार्य को सम्पन्न करने में सहयोग नहीं देती है। मानवता के कल्याण हेतु बच्चों को ''लोका: समस्ता: सुखिनो भवन्तु'' के सिद्धान्त का महत्त्व समझाया जाना चाहिए और उन्हें इस ओर सार्थक प्रयास करने की प्रेरणा दी जानी चाहिए ताकि वे दीन-दुखियों का दु:ख-दर्द महसूस कर सकें और उनके लिए प्रेरणा स्त्रोत बन सकें।

3. **अनुशासन:** अनुशासन सफलता की पहली सीढ़ी है। ऐसा विचार बच्चों के मन में अवश्य जागृत किया जाना चाहिए और उन्हें इस बात का महत्व प्रधानता से समझाया जाना चाहिए कि जीवन में अनुशासन का उल्लेखनीय महत्त्व है। समाज में हर वर्ग को पूर्ण रूप से अनुशासित होना चाहिए। ऐसा होने पर समाज में सुख एवं शान्ति का अनुभव किया जा सकता है और प्रत्येक व्यक्ति अपनी जिम्मेदारियों का भली प्रकार निर्वाह कर सकता है। एक अनुशासित व्यक्ति ही घर, परिवार समुदाय प्रांत व देश को प्रगति की राह पर ले जा सकता है।

4. **सहनशीलता:** सहनशीलता एक ऐसा सत्य है जिससे प्राय: सभी को अपने जीवनकाल में रूबरू होना पड़ता है। यह वह अत्यन्त प्रभावशाली गुण है जो निरन्तर अभ्यास से सीखा जा सकता है। इससे जीवन का वास्तविक विकास होता है और इसी बात की आवश्यकता भी है हम सहनशील बने ताकि हमारे कर्म और व्यवहार से किसी को कोई कष्ट न हो।

5. **जिम्मेदारी :** जिम्मेदारी बच्चों के लिए बहुत ही मूल्यवान गुण है। उन्हें उनकी क्षमता एवं साहस के अनुसार जिम्मेदारी देनी चाहिए ताकि वे निर्धारित लक्ष्य की ओर अग्रसर हो सके और उन्हें सफलतापूर्वक पूरा कर सकें। इस प्रकार वे आगे चलकर हर बड़े लक्ष्य को पाने का उत्तरदायित्व निभाने में सक्षम महसूस कर सकेंगे और जीवन की दौड़ में आगे निकलते जाएँगे।

6. **आचार-विचार:** ''आचारा: परमो धर्मा:'' आचार ही सबसे बड़ा धर्म है ओर विचारों से हम धर्म की महानता का व्याख्यान कर सकते हैं और धर्म का प्रसार कर सकते हैं। आचारहीन पुरुष धनवान, बलवान अथवा वेदों का ज्ञाता होते हुए भी पशु के समान है और सदाचारी मानव सदैव समाज का हितैषी होता है। विचार मन से पैदा होते हैं। वाणी से प्रकट होते हैं और आचरण में आते हैं। अच्छे आचरणों का अच्छा परिणाम और बुरे आचरणों का बुरा परिणाम होता है। माता-पिता को इन बातों का विशेषता से बच्चों को समझाना चाहिए ताकि वे सदैव पवित्र एवं सद्विचारों को अपने जीवन में ग्रहण कर सकें और सद्व्यवहारों से प्रेरित होकर मानव कल्याण हेतु कार्यों की ओर अग्रसर हो।

7. **निर्भय:** सामाजिक कुरीतियों से जकड़े हुए समाज में हर पल परिस्थितियाँ बदल रही है जिसमें इस बात का अनुमान लगाया जाना बहुत मुश्किल हो गया है कि अगले क्षण क्या होने वाला है। ऐसी परिस्थितियाँ झेल पाने के लिए बच्चों को बुद्धिमान एवं साहसिक होना बहुत जरूरी है। माता-पिता को बच्चों को डर से उभरने का तरीका सिखाना चाहिए और निडरता से अपनी बात रखने के अवसर प्रदान करने चाहिए।

8. **परिश्रमी :** परिश्रम सद्गुण है जिसकी परिभाषा वर्णन करना सहज नहीं है। परिश्रमार्थी अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सक्षम होता है क्योंकि परिश्रम कभी बेकार नहीं जाता और मेहनती मनुष्य के लिए कुछ भी असम्भव नहीं होता। इसलिए इस शिक्षा पर बच्चों का ध्यान आकर्षित करते हुए उन्हें प्रेरित करना चाहिए कि वे कभी भी काम से मन न चुराएँ। उनमें धैर्य की कभी न हो और वे हर कार्य को पूरी गम्भीरता से ले और हर सम्भव कोशिश से सफलता की ओर अग्रसर हो।

9. **स्वाध्याय:** स्वाध्याय का विशेष महत्त्व है अत: इस ओर भी विशेष ध्यान देने की उतनी ही आवश्यकता है। स्वाध्याय से मन, बुद्धि, चरित्र, वीरता, धैर्य, कार्य-कुशलता, मर्यादा एवं शैर्य आदि अनेक गुणों का सामूहिक विकास संभव है। इसलिए माता-पिता को बच्चों में पठन-पाठन में विशेष रुचि जागृत करनी चाहिए और बच्चों को विभिन्न विषयों पर लघुपुस्तिकाएँ विशेषकर रामायण, गीता, महाभारत, एवं महापुरुषों की जीवन कथाएँ जैसे लाला लाजपतराय, स्वामी विवेकानन्द, जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, महाराणा प्रताप, रानी झाँसी, लक्ष्मी बाई, वीर शिवाजी आदि उपलब्ध करानी चाहिए ताकि बच्चे मर्यादा, वीरता, देशभक्ति जैसे गुणों को अपने जीवन में उतार सकें।

10. **प्रेरणा:** बच्चों में उत्साह की कभी नहीं होती लेकिन उन्हें ठीक समय पर अवसर प्रदान किए जाने की आवश्यकता होती है ताकि वे निर्धारित लक्ष्य को सफलतापूर्वक पाने के लिए प्रेरित होकर यथाशक्ति प्रयास करें और सफल हो। यदि ऐसा न हो तो भी उन्हें निराश नहीं होने देना चाहिए बल्कि ऐसा महसूस कराना चाहिए कि उनका परिश्रम बेकार नहीं गया और अपने लक्ष्य के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित रहते हुए अवश्य हर ऊँचाई तक पहुंच सकते हैं। इसके साथ-साथ बच्चों को प्रेरित किया जाना चाहिए कि वे अपने से बड़ों को पूरा मान-सम्मान दे, उनकी आज्ञा का पालन करें, दूसरे के प्रति अपना कर्त्तव्य न भूलें एवं परिवार, समुदाय व देश के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित हो।

11. **आशावादी:** निराशावाद बहुत भंयकर बीमारी है। ऐसा व्यक्ति हर पल विपरीत परिस्थितियों में घिरा रहता है और कुछ भी सार्थक कार्य करने में सक्षम नहीं हो पाता। ऐसी परिस्थितियों उसके दिल दिमाग में इस प्रकार प्रभावित हो जाती है कि वह चाहते हुए भी कभी कोई सकारात्मक निर्णय नहीं ले पाता और निराशावाद के जाल में उलझा रहता है। आशावादी मानव विपरीत परिस्थितियों एवं हार से निराश नहीं होता बल्कि उनसे शिक्षा लेकर आगे बढ़ने का प्रयास करता है।

12. **स्वास्थ्य:** आधुनिक परिस्थितियों में स्वास्थ्य की ओर आपेक्षित ध्यान नहीं दिया जाता।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय

हिन्दू राष्ट्रनिर्माता-छत्रपति शिवाजी

भारत माता ने अपनी गोद से एक ही नहीं अपितु अनेकानेक महापुरूषों को समय-समय पर जन्म देकर अपने आपको कृतार्थ किया है। ठीक इसी प्रकार जब भारत भूमि पर मुगलों का नृशंस और अत्याचारी शासन था। उनके अत्याचार से हिन्दू जनता त्राहि-त्राहि करके लहू के घूंट पीकर जैसे-तैसे समय काट रही थी। गोहत्या आम हो गई थी। ब्राह्मणों और श्रेष्ठ पुरूषों का निरादर और अपमान हो रहा था। हिन्दुओं के मन्दिरों को तोड़कर उन पर मस्जिदें खड़ी कर दी गई थी। राजपूत और क्षत्रिय भी विलासिता एवं झूठे अभिमान में डूबे रहते थे। ऐसे कठिन समय में हिन्दू जाति को संगठित करने के लिए धर्म की रक्षा के लिए स्वनाम धन्य छत्रपति शिवाजी महाराज का जन्म हुआ।

शिवाजी का जन्म 19 फरवरी सन् 1630 को शिवनेरी के दुर्ग में माता जीजाबाई की कोख से हुआ था। शिवनेरी का दुर्ग पूना से उत्तर की तरफ जुन्नर नगर के पास था। इनके पिता का नाम शाहजी भोंसले था जो मुसलमानी शासक बीजापुर के यहां एक जागीरदार थे। शिवाजी के जीवन निर्माण का भार उनकी माता जीजाबाई के अधीनस्थ आरम्भ हुआ। बाल्यकाल में ही माता जीजाबाई ने अपने प्रियपुत्र शिवाजी को रामायण और महाभारत की कथाएं सुनाकर उसके हृदय में हिन्दुत्व के भाव कूट-कूटकर भर दिए। शिवाजी महाराज के चरित्र पर माता-पिता का बहुत प्रभाव पड़ा। वे सभी कलाओं में निपुण थे। दादा कोणदेव ने शिवाजी महाराज को राजनीति और युद्ध विधियों में प्रवीण कर दिया। बचपन से ही वे उस युग के वातावरण और घटनाओं को भली प्रकार समझने लगे थे। शासक वर्ग की करतूतों पर झल्लाते थे और बेचैन हो जाते थे। उनके बाल हृदय में ही स्वाधीनता की लौ प्रज्जवलित हो गई थी। उन्होंने कुछ स्वामिभक्त साथियों का संगठन किया। अवस्था बढ़ने के साथ-साथ विदेशी शासन की बेड़ियां तोड़ने का उनका संकल्प प्रबलतर होता चला गया। अपने शिक्षक एवं पूना के प्रबन्धक कोणदेव की मृत्यु होने के पश्चात शिवाजी ने अपनी जागीर का प्रबन्ध अपने हाथों में लेकर अपनी बिखरी मराठा जाति को सुसंगठित और बलशाली बना दिया।

युवा होने पर शिवाजी ने सर्वप्रथम बीजापुर नवाब के एक दुर्ग तोरण पर आक्रमण करके उसे अपने अधीनस्थ कर लिया। धीरे-धीरे उन्होंने अपनी सेना का विस्तार करके मुगलों के अन्य किले रायगढ़, पुरन्दर और राजगढ़ को विजय कर उस पर अपने भगवे झण्ड़े फहरा दिए। बीजापुर के नवाब ने शिवाजी की निरन्तर विजय से चिन्तित होकर अपने एक प्रसिद्ध सेनापति अफजल खां को उन्हें परास्त करने के लिए भेजा। शिवाजी और अफजल खां की भेंट जब एकान्त स्थान पर हुई तो अफजल खां ने उन्हें घसियारा कहकर पुकारा। इस पर शिवाजी ने क्रोधित होकर अपने बिछुए और बाघनखे से अफजल खां की अन्तड़ियां बाहर निकाल दी और अपनी भवानी तलवार से उसका सिर काट दिया। शिवाजी के शंखनाद करते ही आसपास की झाड़ियों में छिपी मराठा सेना ने अफजल खां की सेना पर धावा बोल दिया और बीजापुर की सेना को परास्त कर दिया। शिवाजी की बढ़ती हुई सेना से भयभीत होकर दिल्लीपति मुगल सम्राट औरंगजेब ने अपने मामा शाइस्ताखां को शिवाजी से लड़ने के लिए दक्षिण भेजा। शाइस्ताखां की विशाल सेना ने चाकन, पूनिया और पूना के अजेय दुर्ग को जीतकर पूना में डेरा डाल दिया। युद्ध विशारद और नीतिनिपुण शिवाजी ने अब युद्ध की अपेक्षा चाणक्य नीति से काम लेकर एक बारात की शक्ल में पूना दुर्ग को रात के समय चारों ओर से घेर लिया। इस बार सौ निपुण वीर मराठा सैनिकों ने रात के अंधियारे में शाइस्ताखां पर भीषण आक्रमण कर दिया। परिणामत: उसका प्रिय पुत्र मारा गया और खिड़की से भागते समय उसकी दो उँगलिया भी कट गई। औरंगजेब ने अपनी हार से तिलमिलाकर जयपुर के सवाई माधोसिंह को शिवाजी से लड़ने के लिए भेजा। शिवाजी ने सवाई राजा माधोसिंह के कहने पर मुगलों से सन्धि कर ली और औरंगजेब से सन्धि के लिए दिल्ली चले गए। यहां औरंगजेब ने उनका समुचित आदर सत्कार न करके उन्हें तीसरे दर्जे के सरदारों में स्थान दिया और बाद में उन्हें कैद करके उन पर सख्त पहरा बैठा दिया। इस पर शिवाजी ने चालाकी से काम लिया। एक मिठाई वाली टोकरी में छिपकर वे बाहर आ गए और साधु वेश में घूमते-घूमते नौ महीने में अपने राज्य पूना में जा पहुंचे और माता के दर्शन कर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया और फिर दिग्विजय के लिए सैन्य संचालन आरम्भ कर दिया। उन्होंने सारे दक्षिण भारत को विजय कर विशुद्ध हिन्दु राष्ट्र की स्थापना कर दी और धर्म की प्राण प्रतिष्ठा की।

शिवाजी ने अपने बाहुबल और कृष्ण एवं चाणक्य नीति के बल पर दुर्बल एवं पददलित हिन्दू जाति में प्राण प्रतिष्ठा फूंकी और एकमात्र हिन्दू पद पर बादशाही की स्थापना की। उन्होंने अपने राज्य का विस्तार किया। सूरत के बन्दरगाह को लूटकर अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिए। सिंहगढ के अजेय दुर्ग को विजय कर 6 जून 1674 को रायगढ़ के किले में अपना राज्याभिषेक किया। हैदराबाद और कर्नाटक को अपने पैरों तले रौंद दिया। शिवाजी ने अपना एकछत्र राज्य स्थापित करके 3 अप्रैल 1680 को नश्वर देह का त्याग किया।

शिवाजी के राज्य में प्रजा सुखी थी। धन-धान्य की प्रचुरता थी। शासन व्यवस्था अति उत्तम थी। वे एक आदर्श राजा थे। दूसरे धर्मों के प्रति सहिष्णु और उदार थे। वे कुशल राजनीतिज्ञ न्यायमूर्ति असाधारण संगठनकर्ता, गोपालक और सचरित्र राजा थे। अपने समकालीन मुगलों की तरह वे भी निरंकुश शासक थे अर्थात् शासन की समूची बागड़ोर राजा के हाथ में ही थी पर उनके प्रशासकीय कार्यों में मदद के लिए आठ मन्त्रियों की एक परिषद थी जिन्हें अष्टप्रधान कहा जाता था। अपनी योग्यता और कुशलता के कारण ही एक साधारण से जागीरदार से दक्षिण के छत्रपति सम्राट बन गए।

छत्रपति शिवाजी महाराज में वीरता कूट-कूटकर भरी हुई थी। अपनी माता जीजाबाई से अच्छे गुणों की शिक्षा लेकर वे एक महान् योद्धा बनें। शिवाजी महाराज एक न्यायप्रिय शासक थे। उनका सारा जीवन सद्गुणों एवं सद्विचारों से परिपूर्ण था। ऐसे वीर योद्धा और शासक के जीवन से प्रेरणा लेकर हम भी अपने देश, जाति और धर्म के लिए कार्य करें।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा

मिलकर चलना सुखद है

ले०-महात्मा चैतन्यमुनि तहसील सुन्दरनगर, मण्डी (हि०प्र०)

ऋग्वेद के अन्तिम सूक्त 'संगठन सूक्त' के प्रथम मन्त्र में परमात्मा से ही प्रार्थना की गई है-

सं समिद्युवसे वृशन्नग्ने विश्वान्यर्य आ।

इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर।।

'ऋ० 10-191-1'

हे सुखो के वर्षक, सबके स्वामी प्रकाश स्वरूप परमात्मा! आप संसार के सब पदार्थों को अपनी उचित व्यवस्था के अनुसार परस्पर मिलाते हो और फिर उनका वियोग भी आप ही करते हो, आप अपनी शक्तियों से इस धरती पर चमक रहे हो। हे महान् सामार्थ्य वाले परमात्मा! आप हमें सब प्रकार के ऐश्वर्य प्रदान कीजिए। अब यह स्थिरता, व्यवस्था, परस्पर का मिलन तथा सब प्रकार के ऐश्वर्यों के स्वामी हम कैसे बन सकते हैं इसका दिशा-निर्देश भी परमात्मा ने अगले मन्त्र में प्रस्तुत कर दिया है-

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम।

देवा भाग यथा पूर्वे संजानाना उपासते।।

'ऋ० 10-191-2'

हे मनुष्यो! आप लोग पूर्ववर्ती विद्वानों के समान एक साथ चलो, एक साथ आचरण करो, अर्थात् परस्पर अच्छी प्रकार मिलकर रहो। आचरण और सदाचार की समानता के लिए परस्पर मिलकर प्रेम से एक सी भाषा. एक सी बोली, एक सी उक्ति और एक सा उच्चारण मधुरता से पूर्ण करके करो। आप लोगों के मन, बुद्धि, चित्त और अन्तःकरण एक समान होकर ज्ञान प्राप्त करें। इस प्रकार आचरण करने से आप लोग भी, पूर्वज विद्वानों के समान, अपने जीवन के परिश्रम के परिणाम स्वरूप सर्वोत्तम भाग अर्थात् मोक्ष सुख को प्राप्त होवो। इस मन्त्र में इतना सुन्दर उपदेश दिया गया है कि यदि इसके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति अपना जीवन बिताना आरम्भ कर दे तो सब प्रकार की समस्याओं का अन्त हो जाएगा। यदि कौरव और पाण्डव आपस में मिलकर रहते तो संभवतः न तो इतना बड़ा भयंकर युद्ध होता.... न इतने बड़े-बड़े योद्धा मारे जाते और न ही भारतवर्ष को अपनी यह पतनावस्था देखनी पड़ती। राजपूत राजाओं में भी यदि आपसी मेल-मिलाप रहता तो कोई विदेश उनके राज्य को उनसे नहीं छीन सकता था। मगर वे भी आपसी फूट के कारण ही अपना सब कुछ गंवाकर बैठ गए और देश को गुलामी का अभिशाप झेलना पड़ा। बांद में मुसलमानों को भी उनकी आपसी फूट ही मार गई। उनमें भी यदि आपस में मेलमिलाप रहता, गद्दी की होड़ में एक दूसरे के खून के प्यासे न होते तो अंग्रेज इस देश को गुलाम नहीं बना सकते थे।

इसलिए वेद कहता है-**सं गच्छध्वम्,** मिलकर चलो। मिलकर चलने से जहां एक ओर चतुर्दिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त होगा वहीं दूसरी ओर सुख और शान्ति की स्थापना भी हो सकेगी। इससे परिवार, राष्ट्र और विश्व में एक सार्वभौमिक अनुशासन की स्थापना भी हो सकेगी। किसी भी अभियान में सफलता प्राप्त करने के लिए सामूहिक अनुशासन और मिलकर चलने की बहुत जरूरत होती है। यदि यह बात समूचे समाज पर लागू हो जाए तो समाज में बहुत ही सुन्दर व्यवस्था स्थापित हो सकती है। **जीओ और जीने दो** का यह सबसे उत्तम आधार है। आज समाज या परिवार में इससे बिल्कुल ही उल्टा हो रहा है, इसलिए वैर-वैमनस्य भी बढ़ गया है। आज तो अपने-अपने घोर स्वार्थों में दूसरे की उन्नति की बात तो दूर रही बल्कि दूसरे का सब कुछ हड़प जाने के लिए होड़ लगी हुई है। भौतिकवादी चकाचौन्ध में व्यक्ति अन्धा हो गया है। मिलकर चलने की भावना को लेकर ही सुख और शान्ति के साम्राज्य की स्थापना की जा सकती है। वेद कहता है-

सहृदयं साम्मनस्यमविद्वैष कृणोमि वः। अन्योऽन्यमभिहर्यत वत्सं जातमिवाध्न्या।।

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा। सम्यंच्चः सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया।।

अथर्व03-30-1

अर्थात् हे मनुष्यो! मैं तुम्हें सौहार्द, सामनस्य तथा अविद्वैष का उपदेश करता हूँ। तुम एक दूसरे से ऐसे ही प्रेम करो जैसे नवजात बछड़े से गाय प्यार करती है। कोई भाई दूसरे भाई से द्वैष न करे, कोई बहिन दूसरी बहिन से द्वैष न करे। तुम मिलकर चलते हुए, सहकर्मी होते हुए एक दूसरे के प्रति भद्र वाणी बोला करो। मन्त्र में आगे कहा है-**'सं वो मनासि जानताम्'** अर्थात् हम सबके मन एक हों। मानसिक एकता बहुत ही जरूरी है। मानसिक एकता की स्थापना के लिए एक दूसरे को गहराई से समझने की जरूरत है। संसार में अधिकतर झगड़े गलतफहमियों के कारण होते हैं। ये गलतफहमियां और संशय तभी पैदा होते हैं जब हम एक दूसरे के पास जाकर समझने-समझाने का प्रयास नहीं करते हैं। इसीलिए वेद कह रहा है कि हमारे मन एक हों। एक दूसरे की भावनाओं को समझने वाले हों। इससे अगले भाग में वेद और भी अधिक महत्वपूर्ण बात कह रहा है- **'देवा भागं यथापूर्वे संजानाना उपासते।'** जैसे हमसे पूर्व विद्वान्, देव-पुरूष, ज्ञानवान् और एक मति वाले होकर अपना-अपना भाग प्राप्त करते रहे हैं, वैसा ही हम भी करें। दूसरे के हिस्से को हड़पने का प्रयास ही लड़ाई-झगड़ों का मूल कारण है। मन्त्र कह रहा है कि जिस प्रकार हमारे पूर्वज लोग केवल अपना हिस्सा लेकर शेष दूसरों को छोड़ देते थे वैसा ही यदि हम भी करें तो इसी में सार्थकता है। ऐसा यदि करें तो हमारे हाथ जीवन के कुछ शाश्वत् सूत्र लग सकते हैं। जिनके कारण हमारा परिवार या समाज और राष्ट्र सुख-समृद्धि से परिपूर्ण हो सकता है। ऋग्वेद के इस संगठन-सूक्त में आगे और बहुत ही उत्तम शिक्षाऐं दी गई हैं। अगले मन्त्र में कहा है-

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषम।

समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन को हविषा जुहोमि।।

ऋ० 10-191-3

अर्थात् तुम्हारे गुप्त विषयों के गंभीर विचार मिलकर हों, विचार के लिए तुम्हारी सभाएं एक जैसी हों जिनमें तुम सब मिलकर बैठ सको, तुम्हारा मनन मिलकर हो, मैं तुम्हें मिलकर विचार करने का उपदेश देता हूँ और तुमको पारस्परिक उपकार के जीवन में नियुक्त करता हूँ। सूक्त में आगे निर्देश दिया गया है।

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।

समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।

ऋ०10-191-4

अर्थात् तुम्हारे संकल्प और प्रयत्न मिलकर हों, तुम्हारे हृदय परस्पर मिले हुए हों, तुम्हारे अन्तःकरण मिले रहें जिनमें परस्पर सहायता से तुम्हारी भरपूर उन्नति हो।

वेद द्वारा प्रदत्त इन सूत्रों के कार्यन्वयन द्वारा ही व्यक्ति और समाज की चतुर्दिक उन्नति संभव है। श्रीराम और श्री भरत का उदाहरण हमारे सामने है। अयोध्या की उन्नति का यही रहस्य है। अयोध्या का विशाल राज्य एक-दूसरे को समर्पित कर रहे हैं। दूसरी ओर औरंगजेब जैसे शासक भी हैं जो राज्य प्राप्ति के लिए न केवल अपने भाईयों की हत्या करते हैं बल्कि अपने पिता को भी बन्दी बनाकर यातनाएं देते हैं। सामाजिक समरसता के लिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति संगठन और समर्पण की भावना से परिपूर्ण हो क्योंकि जहां कहीं भी किसी एक में अकड़ आई कि आपसी सामंजस्य टूट जाते हैं। महाभारत में बहुत सुन्दर बात कही गई है-

न वै भिन्ना जातु चरन्ति धर्मं, न वै सुखं प्राप्नुवन्तीह भिन्नाः।

न वै भिन्ना गौरवं प्राप्नुवन्ति, न वै भिन्नाः प्रशमं रोचयन्ति।।

न वै तेषा स्वदते पथ्यमुक्तं, योगक्षेमं कल्पते नैव तेषाम्।

भिन्नानां वै मनुजेन्द्र परायणं न विद्यते किंचिदन्यद् विनाशात्।।

अथ ये सहिता वृक्षाः संघर्षः सुप्रतिष्ठताः। ते हि शीघ्रतमान् वातान् सहन्तेऽन्योन्यसंश्रयात्।।

घमायन्ते व्यपेतानि, ज्वलन्ति सहितानि च। धृतराष्ट्रोल्मुकानीव, ज्ञातयो भरतर्षम।। महा० उ० 36-56,57,59,60

अर्थात् भेद-भाव को प्राप्त हुए भाई-बन्धु कभी भी धर्म का आचरण नहीं कर पाते, न वे सुख पाते हैं, न गौरव को प्राप्त करते हैं और न ही उन्हें शान्ति अच्छी लगती है। कही गई हित की बात भी उन्हें अच्छी नहीं लगती तथा उनका योगक्षेम भी नहीं हो पाता अर्थात् अप्राप्त की प्राप्ति और प्राप्त की

(शेष पृष्ठ 5 पर)

पेड़-पौधे एवं वन संरक्षण-यजुर्वेद

ले०-शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

जीवधारियों एवं पेड़ पौधों का जीवन एक दूसरे पर आधारित है। जीवधारियों के रहने के लिए ऑक्सीजन गैस की महती आवश्यकता है। वायु नाइट्रोजन, ऑक्सीजन, कार्बन-डाई ऑक्साइड तथा बहुत कम मात्रा में उपस्थित हीलियम, आर्गनाजेनन आदि गैसों का मिश्रण है। इसमें नाइट्रोजन 78% ऑक्सीजन 21% कार्बनडाई ऑक्साइड 03% तथा शेष अन्य गैसों धूल के कण तथा वाष्प होती है। जीवधारी प्राणी वायु में से ऑक्सीजन का उपयोग रक्त परिभ्रमण, भोजन के पाचन आदि में काम में लेते हैं। इससे श्वास छोड़ते समय हवा में ऑक्सीजन की मात्रा कम तथा कार्बन-डाई-ऑक्साइड की मात्रा बढ़ जाती है। यह हवा श्वास लेने के योग्य नहीं रहती है। हमारे इस कार्य में पेड़-पौधे हमारा सहयोग करते हैं। पेड़-पौधे सूर्य के प्रकाश में इस वायु में से कार्बन-डाई-ऑक्साइड सोख लेते हैं तथा संश्लेषण क्रिया द्वारा क्लोगेफिल की उपस्थिति में, इनमें से कार्बन अपने लिए रख लेते हैं जिनसे उनका विकास होता है तथा ऑक्सीजन निकाल देते है जो हमारे लिए उपयोगी है। इसके अतिरिक्त पेड़-पौधों से हमें औषधियां, गोंद, रबर, कागज, रंग तथा इमारती लकड़ी भी प्राप्त होती है। हमारे सभी खाद्य पदार्थ तथा पेय पदार्थ भी नाना प्रकार की वनस्पति से ही प्राप्त होते है। वन बाढ़ से हमारी रक्षा करते है तथा उपजाऊ मिट्टी के अपरदन को रोकते हैं। वन वर्षा का भी मुख्य कारण है। नाना जंगली जानवरों के लिए भी वन आश्रय का कार्य करते हैं। अत: पेड़-पौधे और वनों का संरक्षण अत्यन्त आवश्यक है। वेदों में इस विषय में पर्याप्त चिन्तन हुआ है। पाठकों के लिए मैं यजुर्वेद में से कुछ विचार प्रस्तुत कर रहा हूँ।

शतं वोऽअम्ब धामानि सहस्त्रमुत वो रूहः।
अधा शतक्रत्वो यूयमिमं मे ऽअगदं कृत।। यजु. 16.76

अर्थ-हे (शतक्रत्वः) सैकड़ों प्रकार की बुद्धि वा क्रियाओं से युक्त मनुष्यों। (यूयम्) तुम लोग जिनके (शतम्) सैकड़ों (उत) वा (सहस्त्रम्) हजारों (रूहः) नाडियों के अंकुर हैं उन औषधियों से (मे) मेरे (इमम्) इस शरीर को (अगदम्) नीरोग (कृत) कर दो। (अथ) इसके पश्चात् (वः) आप अपने शरीर को भी रोग रहित करो जो (वः) तुम्हारे असंख्य (धामानि) कर्म स्थान है उनको प्राप्त होओ। हे (अम्ब) माता। तू भी ऐसा ही कर।

भावार्थ-मनुष्यों को चाहिए कि ओषधियों का सेवन करके, पथ्य का आचरण करके शरीर को नीरोग बनाएं। ओषधियों के नियमित सेवन तथा पथ्य का आचरण करके रोगों से युक्ति पा सकते है।

ओषधीः प्रतिमादध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वाइव सजित्वरीरूधः पारयिष्णवः।। यजु. 12.77

जैसे घोड़े पर चढ़कर वीर पुरूष शत्रुओं से युद्ध करके विजय प्राप्त करते हैं वैसे ही श्रेष्ठ ओषधियों के सेवन और पथ्याहार करने वाले जितेन्द्रिय पुरूष रोगों पर विजय प्राप्त कर आनन्द भोगते हैं।

अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता।
गोभाजऽइत् किलासथ यत् सनवथ पुरूषम्।। यजु. 12.79

अर्थ-हे मनुष्यों। ओषधियों के समान (यत्) जिस कारण (वः) तुम्हारा (अश्वत्थे) कल रहे वा न रहे ऐसे शरीर में (निषदनम्) निवास है और (वः) तुम्हारा (पर्णे) कमल के पत्ते पर जल के समान चलायमान संसार में ईश्वर ने (वसतिः) निवास (कृता) किया है। इससे (गोभाजः) पृथ्वी को सेवन करते हुए (किल) ही (पुरूषम्) अन्न आदि से पूर्ण देह वाले पुरूषक को (सनवथ) ओषधि देकर सेवन करो और सुख को प्राप्त होते हुए (इत्) इस संसार में (असथ) रहो।

भावार्थ-मनुष्य को ऐसा विचार कर कि यह शरीर तो अनित्य है। इससे शरीर को ओषधियों के प्रयोग से नीरोग कर मोक्ष प्राप्ति के लिए धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का अनुष्ठान करना चाहिए।

अति विश्वाः परिष्ठाः स्तेनऽइव व्रजमक्रमुः।
ओषधीः प्राचुच्यवुर्यत्किं च तन्वो रपः।। यजु. 12.84.

भावार्थ-जैसे गौओं के स्वामी से धमकाया गया चोर दीवार को फांद कर भाग जाता है वैसे ही श्रेष्ठ ओषधियों से ताड़ना किये रोग नष्ट होकर भाग जाते हैं। रोगों से निवृत होने के लिए ईश्वर ने ओषधियों की रचना की है।

याः फलीनीर्याऽ-अफला-ऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पति प्रसूता स्ना नो मुञ्चन्त्वऽहसः।। यजु. 12.89

अर्थ-हे मनुष्यों। जो बहुत से फलों से युक्त अथवा फलों से रहित, जो फूलों से रहित और जो बहुत फूलों वाली ईश्वर द्वारा उत्पन्न की गई ओषधि हमको दुःखदायी रोग से जैसे छुड़ावें, वैसे तुम लोगों को भी रोग से छुड़ावे।

किसी को भी कभी भी ओषधियों को नष्ट नहीं करना चाहिए।

अवपतन्तीरवदन्दि व ऽ ओषधयस्परि।
यं जीवमश्नवामहै न स रिष्याति पूरूषः।। यजु. 12.91.

अर्थ-हम लोग जो (दिवः) प्रकाश से (अवपतन्तीः) नीचे को आती हुई (ओषधयः) जो सोमलतादि ओषधि हैं जिनको विद्वान् लोग (पर्य्यवदन्) सब ओर से उपदेश करते हैं। जिनसे (यम्) जिस (जीवम्) प्राण धारणा को (अश्नवामहै) प्राप्त होवे (सः) वह (पुरूषः) पुरूष (न) कभी नहीं (रिष्यति) रोगों से नष्ट होवे।

ओषधि को खोदते समय उसकी जड़ को सुरक्षित रखना चाहिए।

मा वो रिषत् खनिता यस्मै चाहं खनामि वः।
द्विपाच्चतुष्पादस्याक ँ सर्वमस्त्वनातुरम्।। यजु. 12.95.

अर्थ-हे मनुष्यों। (अहम्) मैं (यस्मै) जिस प्रयोजन के लिए ओषधि को (खनामि) खोदता हूँ अथवा उखाड़ता हूँ वह (खनिता) खोदी हुई (वः) तुमको (मा) न (रिषत्) दुःख देवे जिससे (वः) तुम्हारे और (अस्माकम्) हमारे (द्विपात्) मनुष्यादि तथा (चतुष्पात) गौ आदि पशु (सर्वम्) सब प्रजा उस ओषधि से (अनातुरम्) रोगों के दुःखों से रहित (अस्तु) होवे।

ओषधि के सेवत से आयु भी बढ़ती है।

दीर्घा युस्तऽओषते खनिता यस्ते मै च त्वा खनाम्यहम्।
अथो त्वं दीर्घायुर्भूत्वा शतवल्शा वि रोहतात्।। यजु. 12.100

भावार्थ-हे ओषधियों के गुण दोष जानने वाले पुरूष। तुम लोग श्रेष्ठ ओषधियों के सेवन से अधिक आयु प्राप्त करो और वह पुरूष भी अधिक आयु प्राप्त करे जिसके लिए ओषधि खोदी गई है। यह ध्यान रहे कि अपने विरोधी वैद्य से दवा न लेवे।

त्वमुत्त मास्योषधे तव वृक्षाऽउपस्तयः।
उपस्तिरस्तु सोऽस्कामं योऽअस्माँ 25 अभिदासति।।यजु. 12.101

अर्थ-हे वैद्य जन। जो हमको अभिष्ट सुख देता है वह तू हमारा साथी होवे जो उत्तम ओषधि है जिससे वट आदि वृक्ष समीप इकट्ठे होने वाले हैं उस ओषधि से हमारे लिए सुख दे।

वनों की रक्षा करने के लिए वनपाल रखे जाएं औन उनका सम्मान होवे।

नमो वन्यायच कक्षाय च यजुर्वेद 16.34

लोग जंगल में रहने वालों और वन के समीप कक्षाओं में रहने वालों तथा गुफा आदि में रहने वालों को अन्न देवें।

पृष्ठ 4 का शेष-मिलकर चलना सुखद है

पृष्ठ 4 का शेष

रक्षा नहीं हो पाती है। हे राजन्! इस प्रकार भेद-भाव को प्राप्त हुए भाई-बन्धुओं की तो विनाश के अतिरिक्त अन्य कोई गति नहीं है। जो वृक्ष एक साथ संगठित रूप में अच्छी प्रकार स्थिर होते हैं वे एक-दूसरे के सहारे से अतितीव्र झंझावातों को भी सह लेते हैं। हे भरतवासियों में श्रेष्ठ धृतराष्ट्र! भाई-बन्धु जले हुए अग्रभाग वाले काष्ठों के समान अलग रहने पर धुआं देते हैं अर्थात् अलगाव को प्राप्त होकर परेशान होते हैं और साथ रहने पर प्रज्वलित हो जाते हैं अर्थात् हर्ष-रूपी ज्योति को प्राप्त करते हैं। महाभारतकार अन्यत्र कहता है-

सम्भोजनं संकथनं, सम्प्रीतिश्च परस्परम्।
ज्ञातिभिः सह कार्याणि, न विरोधः कदाचन।।

महा० उ० 39-24

समस्त लोगों को आपस में साथ सहभोजन, साथ वार्त्तालाप और साथ-साथ ही प्रेम रखना चाहिए तथा उनसे कभी विरोध नहीं करना चाहिए। एक-दूसरे के प्रति संगठित रहने से ही व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र और अधिक शक्तिशाली बन जाते हैं।

आनंदविभोर प्राणी सब चिंताओं से मुक्त

डॉ.-अशोक आर्य १०४ शिप्रा अपार्टमेन्ट, कौशाम्बी २०१०१० गाजियाबाद

दु:ख-सुख, हानि-लाभ, आशा निराशा, यह सब प्राणी के स्वाभाविक कर्मों का परिणाम होता है। जब सुख, आनंद, हर्ष, उल्लास, प्रसन्नता, मोद-प्रमोद, आदि आते हैं तो प्राणी सुखों से विभोर हो उठता है। इस सब के उलट जब उसे कष्टों का सामना होता है तो चिंतित होता है, विषाद् का अनुभव करता है तथा निराश-हताश सा होकर हाथ पर हाथ धर बैठ जाता है। इस अवस्था में वह परम पिता परमात्मा से दु:खों से छूट कर सुख पाने की याचना करता है। इस बात को वेद का यह मन्त्र इस प्रकार उपदेश करते हुए कह रहा है :

यत्रानन्दाश्च मोदाश्च मुदः आसते।

कामस्य यत्राप्ताः कामास्तत्र माममृतं कृधिन्द्रायेन्दो परि स्रव।। ऋग्वेद ९।११३।११।।

मन्त्र में बहुत ही सुन्दर उपदेश किया गया है। इस उपदेश में कहा गया है-

यत्र आनन्दाः च मोदाः च मुदः प्रमुदः आसते

मंत्र के इस भाग में अनेक प्रकार की खुशियों का वर्णन किया गया है, जो हमारे सुखों को बढ़ाने वाली होती हैं। मन्त्र यहाँ इस प्रकार उपदेश कर रहा है :

जहां पर सब प्रकार के आनंदों का, जहां पर सब प्रकार के आमोद-प्रमोद का, जहाँ सब प्रकार के हर्ष तथा उल्लास का निवास होता है। इस का भाव यह है कि जहाँ अथवा जिस परिवार में सब प्रकार के आनंद, सब प्रकार के आमोद प्रमोद, सब प्रकार की प्रसन्नताएं व उल्लास की स्थिति होती है, इस प्रकार के स्थान के साथ इसकी विपरीत अवस्था कभी न हो अर्थात् जहाँ कभी क्षण मात्र के लिए भी अवसाद न हो, जहां क्षण मात्र के लिए भी विषाद-कष्ट-क्लेश न होता हो, जहाँ किसी भी प्रकार का शोक, किसी भी प्रकार का दु:ख न आता हो, जहाँ किसी प्रकार की चिंता अथवा निराशा का सामना करने के अवसर कभी भी न आते हों, इस स्थान के लिए मन्त्र ने आगे इस प्रकार प्रकाश डालते हुए उपदेश किया है कि :

कामस्य कामाः यत्र आप्ताः

जीव परमपिता परमात्मा से सदा ही कुछ कामनाएं करता है, कुछ अभिलाषों की पूर्ति की मांग करता रहता है। इस सम्बन्ध में मन्त्र कह रहा है कि प्रभु से सदा कुछ न कुछ कामना करते रहने वाले जीव की जहाँ सब कामनाएं पूर्ण हो जाती है। जहाँ उस की सब इच्छाएं समाप्त हो जाती हैं। जहाँ उसकी सब अभि-लाषाएं तृप्त हो जाती हैं।

आगे बढ़ने से पहले हम यह जान लें की हमारी यह सब कामनाएं, सब इच्छाएं आदि कहाँ पर पूर्ण होती हैं ? ऐसा स्थान कौन सा है ? इस का स्पष्ट सा उत्तर है परमपिता परमात्मा की समीपता। परमपिता परमात्मा की समीपता ही हमें इस अवस्था में ले जाने की शक्ति रखती है। अतः यह वह स्थान है, जो परमात्मा के निकट से भी निकटतम होता है। हम इस स्थान को ही पाने का सदा यत्न करते हैं। जब हमें यह स्थान प्राप्त हो जाता है तो हमारी कोई इच्छा, कोई अभिलाषा, कोई कामना शेष नहीं रह जाती। इस लिए हम सदैव प्रभु के निकट अपना ध्यान लगा कर उसकी स्तुति रूप प्रार्थना करने का यत्न करते हैं। जब यह स्थान हमें मिल जाता है तो हमारी कोई ऐसी अभिलाषा शेष रहती ही नहीं और हम सब प्रकार की चिंताओं से मुक्त हो जाते हैं।

इस प्रकार की स्थित को प्रकार की अवस्था में जाने के लिए तथा इस प्रकार की अवस्था में जाकर भी हम परमपिता परमात्मा से हाथ जोड़ कर यह माँगते हैं कि हे प्रभु आप की असीम कृपा से हमें यह अमृत्से भरा हुआ स्थान अथवा यह अमृत से भरा हुआ लोक मुझे मिला है। इस अवस्था में मुझे आनंदित करने वाले पिता। मुझे स्थापित करो हे प्रभु आप की असीम कृपा से मैं किसी प्रकार इस सुख पूर्ण सर्वोत्तम स्थान पर पहुँच तो गया हूँ किन्तु कहीं यह स्थान कुछ क्षणों में मुझ से छीन न जावे इसलिए प्रभु! मुझे वह शक्ति दो कि आप की यह दया मुझ पर निरंतर ही नहीं सदा के लिए बनी रहे तथा आप मुझे सदा-सर्वदा के लिए इस स्थान पर बनाए रखिये। मेरे ऊपर सदा सब प्रकार के सुखों की, सब प्रकार के आनंदों की, सब प्रकार की शान्ति की निरंतर वर्षा करते रहो।

इन शब्दों में मन्त्र ने स्पष्ट किया गया है कि जो अपने जीवन में एक निश्चित उद्देश्य लेकर चलता है तथा उस उद्देश्य की पूर्ति के लिए पुरुषार्थ करता है। अंत में उसे उस उद्देश्य को पाने में निश्चित रूप से सफलता के दर्शन होते हैं। कोई कारण नहीं कि पुरुषार्थ रूप में किये गए उत्तम कर्मों का उत्तम परिणाम न मिले, यह निश्चत रूप से मिलेगा। बस पुरुषार्थ का दामन न छोड़ो जो प्रभु की सतुतीरुप प्रार्थना से ही संभव है।

मानव जीवन का यह शाश्वत सत्य है कि वह सदा कभी न समाप्त होने वाले आमोद प्रमोद की उत्तम अवस्था को अपना उद्देश्य बना कर चलता है तथा इसे पाने के लिए आजीवन प्रयासरत रहता है। इसके साथ ही साथ वह इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए इन सब आनंदों के मूल स्रोत परमपिता परमात्मा का स्मरण, मनन, चिंतन भी करता रहेगा, इस में निरंतर लगा रहेगा। इस के साथ ही साथ उसे उन सब विपत्तियों, बाधाओं को भी पार करना होगा, जो किसी भी प्रकार का भय, किसी भी रूप में विषाद, किसी भी प्रकार की निराशा, भीषण से भी भीषण विपत्तियों के आने पर भी, यह सब उसे कोई हानि नहीं दे सकेंगी, उसकी किसी प्रकार की हानि नहीं कर पावेंगी।

यहाँ तक कहा जा सकता है कि निश्चित उद्देश्य लेकर प्रभु स्मरण करते हुए पुरुषार्थी के पास तक यह विपत्तियाँ नहीं आ पावेंगी। यह एक निश्चित सत्य है, जिसे कभी झुठलाया नहीं जा सकता। जिसे भी सच्चे आनंद की अभिलाषा होती है, जो सच्चे सुख, सच्ची प्रसन्नता पाने की इच्छा होती है, उस सब को पाने का यही एक मात्र साधन है, यही एक मात्र उपाय है। इस सब को अपनाने से ही, इस सब को करने से ही सफलता मिलेगी।

आर्य समाज सान्ताक्रुज़ का 74वाँ वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार समारोह

आर्य समाज सान्ताक्रुज़ का 74वाँ वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार समारोह आर्य समाज के विशाल सभागृह में विगत दिनों मनाया गया। इस अवसर पर ऋग्वेद के मन्त्रोच्चारण के साथ यज्ञ प्रातः 8.00 बजे से 10.00 बजे तक आयोजित किया गया। जिसके ब्रह्मा आचार्य पं. वेदप्रकाश श्रोत्रिय (नई दिल्ली) एवं वेदपाठी पं. नामदेव आर्य, पं. विनोद कुमार शास्त्री, पं. नरेन्द्र शास्त्री एवं पं. प्रभारंजन पाठक थे।

वार्षिकोत्सव के अवसर पर **'वैदिक पुस्तक मेला'** विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा। जिसमें सिर्फ महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत अमर ग्रन्थों की प्रदर्शनी एवं उनका विक्रय किया गया।

वर वधु चयन सेवा का परिचय मिलन सम्मेलन हुआ जिसमें अनेक युवक युवतियों ने भाग लिया। इसका सञ्चालन श्रीमती प्रेमा मिस्त्री व श्रीमती सुधा कुमार ने किया।

दि. 26 जनवरी 2018 को सायं 6 से 9.30 बजे तक **आर्य पुरोहित सभा मुबंई** द्वारा वर्तमान संदर्भ में राष्ट्रीयता विषय पर कवि सम्मेलन एवं प्रवचन का आयोजन किया गया। जिसकी सभी ने खूब सराहना की। लगभग आठ कवियों ने सुन्दर काव्य पाठ किया। तत्पश्चात् आचार्य पं. वेदप्रकाश श्रोत्रिय एवं आचार्य सत्यजीत जी के सारगर्भित प्रवचन हुए।

श्री दिपक पटेल प्रधान आर्य समाज सान्ताक्रुज एवं श्री लालचन्द आर्य प्रधान आर्य समाज सान्ताक्रुज ट्रस्ट ने आर्य समाज सान्ताक्रुज की ओर से समस्त आगन्तुक विद्वानों एवं अतिथियों को शाल एवं श्रीफल देकर सम्मानित किया। श्रीमती शशि सिंह एवं श्री रमेश सिंह आर्य व अन्य सहयोगियो द्वारा तीनों दिन ऋषि लंगर की व्यवस्था सञ्चालित की गयी। समस्त कार्यक्रम का सन्चालन महामंत्री श्री संगीत आर्य ने किया। अंत में विद्वान, आगन्तुकों, श्रोताओं और कार्यक्रर्ताओं का हार्दिक आभार एवं धन्यवाद ज्ञापन किया गया। शान्ति पाठ एवं जयघोष हुआ। ऋषिलंगर के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

आर्य मर्यादा साप्ताहिक पढ़ें और दूसरों को पढ़ाएं तथा लाभ उठाएं।

पृष्ठ 2 का शेष-बाल-संस्कार

परिणाम स्वरूप बच्चों में विभिन्न प्रकार की शारीरिक व बौद्धिक अक्षमताएँ आ जाती है। इसका मुख्य कारण माता पिता के रहन सहन, खान-पान एवं आचार-विचार पर निर्भर करता है क्योंकि गर्भादान में इन बातों की ओर ध्यान नहीं दिया जाता और जन्म के बाद बच्चों करो पर्याप्त सुविधाएँ उपलब्ध नहीं कराई जाती। कुछ एक बच्चे किताबी कीड़े बन कर रह जाते हैं। ऐसे में बच्चों का पूर्ण रूप से विकास नहीं हो पाता। माता-पिता को बच्चों को पौष्टिक आहार देना चाहिए और उन्हें खेल-कूद के लिए प्रेरित करना चाहिए। आज के युग में योग का बहुत महत्त्व है। योग बच्चों के बहुमुखीय विकास के लिए एक प्रमाणित पद्धति है इसलिए बच्चों को योग अभ्यास के लिए अवश्य प्रेरित करना चाहिए।

13. टीमवर्क: सभी को साथ लेकर चलने की भावना बच्चों के मन में जगाना बहुत जरूरी है। मिलकर काम करने का जज्बा और सोच आगे बढ़ने में सहायक होता है और सामूहिक प्रयास से सफलता सुगम हो जाती है। इसलिए किसी वर्ग अथवा समुदाय की अवहेलना नहीं करनी चाहिए। आज का युग प्रतिस्पर्धा का युग है और गम्भीर चुनौतियों का युग है। इसलिए बच्चों को विभिन्न क्षेत्रों में कुशलता एवं प्रवीनता हासिल करना अनिवार्य हो गया है ताकि समय आने पर वे अपनी क्षमताओं को सक्षम रूप से प्रयोग कर सके और दूसरों के दुख में गम्भीरता से उनके साथ खड़े हो सकें क्योंकि हार से ही जीत का रास्ता निकलता है और आगे बढ़ने का हौसला प्रबल होता है।

14. सुसंग: कुसंग बहुत बड़ा अभिशाप है जिसके दुष्परिणाम दीर्घगामी होते हैं। दुर्गुण व दुराचार से कुसंग पनपता है और मानव की बुद्धि को हर लेता है। ऐसे में मनुष्य लोक हित एवं समाज कल्याण के मार्ग से भटक कर सदैव अनुचित कार्यों की ओर प्रेरित होता है जिससे न तो वह खुद सुखी रहता है और न ही दूसरों को सुख का अनुभव करने देता है। यह कुरीति मानव के मन व बुद्धि की निर्बलता और अनियन्त्रित विचारों के कारण शीघ्र आ जाती है। इसलिए माता-पिता को इस ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है और बच्चों के रहन-सहन, आचार-विचार, व उनके कार्य-कलापों पर विशेष सजग रहने की आवश्यकता है ओर समय पर बच्चों को सही रास्ते पर लाने का प्रयास करने की जरूरत है। माता-पिता को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि बच्चे कुसंगत से कोसों दूर रहें और सुसंगत का वैभव पाकर जीवन को उज्जवल बना सकें।

निष्कर्ष: प्रत्येक माता-पिता अपनी जिम्मेदारी को सक्षम रूप से समझे ओर अपना कर्त्तव्य पूर्ण सजगता से निभाने के लिए दृढ़ संकल्प करें ताकि बच्चे शिक्षित, चतुर, निपुण, निडर, जिज्ञासु, साहसी, परिश्रमी ओर बुद्धिमान हो और वे अपने लक्ष्य व उद्देश्य की ओर पूर्ण निश्चय एवं निष्ठा से आगे बढ़ते हुए सफलता प्राप्त कर सकें।

तमित्सखित्व ईमहे तं राये तं सुवीर्ये।
स शक्र उत नः शकदिन्द्रो वसु दयमानः।।

-ऋ० १.१०.६

भावार्थ-हम सब लोग, उस इन्द्र परमेश्वर की, मित्रता के लिए, धन के लिएअ और उत्तम सामर्थ्य के लिए प्रार्थना करते हैं। उस शक्तिमान् इन्द्र प्रभु ने ही, हमें धन देते हुए, शक्तिमान् बनाया है। यदि वह परमात्मा, हमें शरीर बल, बुद्धि बल और सामाजिक बल न देता तो हम लोग कैसे जीवित रह सकते ? सृष्टिरचना के आदि में ही उस प्रभु ने मनुष्य जाति को उत्पन्न किया, बुद्धि बल आदि में ही उस प्रभु ने मनुष्य जाति को उत्पन्न किया, बुद्धिबल आदि इस जाति को दिए तब ही तो यह मनुष्य जाति जीवित है, नहीं तो यह जाति कब की नष्ट भ्रष्ट हो जाती। इस जाति का नाश उस परमात्मा को अभीष्ट नहीं है। थ

समराला में नव कुण्डीय गायत्री महायज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज समराला में नव कुण्डीय गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ। यह गायत्री महायज्ञ हर वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी नव विक्रमी सम्वत्-आर्य समाज स्थापना दिवस चैत्र प्रतिपदा दिनांक 18 मार्च दिन रविवार से लेकर 25 मार्च 2018 दिन रविवार श्री राम नवमी पर्व तक किया गया। प्रतिदिन प्रात: 6:30 बजे से 8:15 बजे तक यज्ञ व सत्संग हुआ। इस कार्यक्रम के अध्यक्ष व यज्ञ के ब्रह्मा-आर्य समाज के पुरोहित-धर्माचार्य श्री राजेन्द्र व्रत शास्त्री (वैदिक भजनोपदेशक) थे।

इस महायज्ञ की पूर्णाहुति 25 मार्च श्री राम नवमी को हुई। प्रात: 7.00 बजे से 8.15 बजे तक शास्त्री जी ने यज्ञ सम्पन्न करवाया। यज्ञ के बाद श्रुति व्रत एवं कंचन व्रत जी के सुमधुर भजन हुऐ, हिसार से आए कर्मवीर शास्त्री जी ने भी भजन गाया, अन्त में आर्य समाज के औजस्वी वक्ता-श्री राजेन्द्र व्रत शास्त्री जी ने यज्ञ की महत्ता बताई-और रामायण व महर्षि दयानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डाला, और शास्त्री जी ने सभी यजमानों को आशीर्वाद दिया, तथा आर्य समाज की तरफ से सभी को बाल सत्यार्थ प्रकाश दिऐ गये। यह कार्यक्रम प्रात: 7.00 बजे से 10.30 बजे तक किया गया और अन्त में ऋषि लंगर भी किया है।

इस अवसर पर प्रधान सोम प्रकाश, मन्त्री अब्रेश कुमार, राज कुमार ढण्ड, अमर नाथ, रमन, कंचन व्रत, श्रुति, संजीव चड्ढा, सुभाष अबरोल, संजीव कुमार, शिव कुमार, श्री राम, जयदीप, गगनदीप व अन्य आर्यजन उपस्थित थे।

मन्त्री-अब्रेश कुमार आर्य

आर्य समाज स्थापना दिवस एवं नव संवत मनाया गया

आर्य समाज दीनानगर की ओर से आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में एवं नव संवत नव वर्ष के उपलक्ष्य में भव्य समारोह करवाया गया। जिसकी अध्यक्षता दयानन्द मठ के अध्यक्ष स्वामी सदानन्द जी महाराज ने की, सर्व प्रथम हवन यज्ञ हुआ। तत्पश्चात् स्वामी जी महाराज ने ओ३म् का ध्वज फहराने की रस्म अदा की। इस समारोह में मुख्यवक्ता श्री भारती ओहरी, श्री यतीन्द्र जी शास्त्री, डॉ. राजन हांडा जी, शास्त्री निवास जी एवं शास्त्री किशोर जी थे। शान्ति देवी आर्य महिला कालेज की छात्राओं एवं आर्य स्कूल के छात्रों ने ऋषि दयानन्द जी के जीवन पर मधुर भजन प्रस्तुत किए। अन्त में स्वामी जी महाराज का बहुत ही प्रभावशाली उद्बोधन हुआ। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज की स्थापना समाज में फैली कुरीतियों को समाप्त करने के लिए की। उनका लगाया हुआ आर्य समाज रूपी पौधा आज वट वृक्ष बन चुका है एवं शिक्षा के प्रचार प्रसार में लगा हुआ है। इस अवसर पर आर्य समाज के प्रधान रघुनाथ सिंह शास्त्री, मन्त्री रमेश महाजन, कोषाध्यक्ष राजेश महाजन, वेद प्रकाश ओहरी, मनोरंजन ओहरी, रणजीत ओहरी, योगेन्द्र पाल गुप्ता, अनिल गुप्ता, प्रेम भारत, सुरेन्द्र कुमार जी, प्रिंसीपल अजमेर सिंह जी, अरूण विज, दिनेश सिंह, विश्वइन्दु ओहरी, रवीन्द्र सिंमह सोडी एवं बहुत से गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

-रमेश महाजन महामन्त्री आर्य समाज, दीनानगर

आर्य मर्यादा साप्ताहिक में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं।

वेदवाणी

प्रभो! हमारे बन्धनों को शिथिल कर

उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय।
अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम।।

-ऋ. १।२४।१५; यजु:० १२।१२; साम० पू० ६।३।१०।४; अथर्व० ७।८३।३

ऋषि:-शुनः शेपो देवरातः।। देवता-वरुणः।। छन्दः-त्रिष्टुप्।।

विनय-हे पापनिवारक देव ! तूने हमें तीन बन्धनों से बाँध रखा है। उत्तम बन्धन हमारे सिर में हैं, जिससे हमारा आनन्द और बुद्धि बँधे हुए हैं, ढके हुए हैं, रुके हुए हैं। यह सत्त्वगुण का (कारण शरीर का) बन्धन कहा जा सकता है। हृदयस्थ मध्यम बन्धन से हमारा मन और सूक्ष्म प्राण बँधे हुए हैं। यह रज और सूक्ष्म शरीर का बन्धन है। नाभि से नीचे तमोगुण और स्थूल शरीर का अधम बन्धन है, जिससे हमारा स्थूल प्राण और स्थूल शरीर बँधा हुआ है। हे वरुण! इनसे बँधे रहने के कारण हमसे तेरे नियमों का भङ्ग होता रहता है और हम पापी बनते रहते हैं। उत्तम बन्धन द्वारा, सच्चा ज्ञान न मिलने से; मध्यम द्वारा राग-द्वेष, काम-क्रोध आदि के वशीभूत होने से; और अधम द्वारा, शरीर से त्रुटियुक्त कार्य करने से हम पापी बनते हैं। हे देव! तू हमारा उत्तम पाश ऊपर की ओर खोल दे, जिससे कि मेरी बुद्धि का द्युलोक के साथ सम्बन्ध स्थापित हो जाए और मुझमें सत्य-ज्ञान का प्रवेश होने लगे। मध्यम पाश को बीच से खोल दे जिससे अन्तरिक्षलोक के समुद्र में मेरे मन के प्रविष्ट हो जाने से इसके राग, द्वेषादि मल धुल जाएँ तथा मेरा मन सम हो जाए और अधर्म पाश को नीचे गिरा दे जिससे मेरे पार्थिव शरीर के सब कलुषित परमाणु पृथिवीतत्त्व में लीन हो जाएँ और हमारा शरीर नीरोग, स्वस्थ तथा निर्दोष होकर प्रभु के कार्य कर सके। हे प्रकाशमय बन्धनरहित देव! इन बन्धनों के टूट जाने पर हम तेरे व्रत में रह सकेंगे, हमसे तेरे नियमों का भङ्ग होना बन्ध हो जाएगा। अन्त में मैं 'अदिति' (मुक्ति) के ऐसा योग्य हो जाऊँगा कि एक दिन आयेगा जबकि मेरा आत्मा स्थूल शरीर रूपी बन्धन को नीचे पृथिवी पर छोड़कर और मानसिक सूक्ष्मशरीर को अन्तरिक्ष में लीन करके अपने ऊपरी बन्धन के भी टूट जाने से ऊपर-द्युलोक-को प्राप्त हो जाएगा। बिना इन तीन बन्धनों के ढीले हुए मैं मुक्ति की ओर कैसे जा सकता हूँ? इसलिए, हे वरुण! इन बन्धनों को एक बार खोल दो-तनिक ढीला कर दो-जिससे कि मेरा मार्ग साफ़ हो जाए और मैं यत्न करता हुआ तेरे व्रत में रहने वाला निष्पाप, मोक्षाधिकारी हो जाऊँ।

आर्य समाज पटियाला का वार्षिक उत्सव

आर्य समाज मन्दिर, आर्य समाज चौक पटियाला में ऋग्वेद पारायण महायज्ञ एवं वार्षिक उत्सव का आयोजन दिनांक 03 अप्रैल से 8 अप्रैल 2018 तक धूमधाम से किया जा रहा है। इस अवसर पर यज्ञ ब्रह्मा एवं मुख्य प्रवक्ता आचार्य हरिशंकर जी अग्निहोत्री आगरा तथा भजनोपदेशक श्री दिनेश पथिक जी अमृतसर होंगे। आप सभी सपरिवार इष्ट मित्रों सहित पहुँचकर पुण्य लाभ प्राप्त करें।

-विजेन्द्र शास्त्री प्रचार मन्त्री आर्य समाज

पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज रमेश नगर करनाल हरियाणा के लिए एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है। दक्षिणा योग्यतानुसार दी जाएगी। वैदिक रीति से सभी संस्कार सम्पन्न करने की योग्यता आवश्यक है। आवास का प्रबन्ध आर्य समाज की ओर से नि:शुल्क रहेगा।

वधू चाहिए

खत्री लड़का,कनाड़ा का पक्का निवासी उम्र 25 वर्ष 6 महीने, कद 5-9, बी. टेक के लिए पढ़ी-लिखी, सुन्दर लड़की चाहिए।

नोट-: लड़का इस समय भारत में आया हुआ है। शीघ्र सम्पर्क करे। मोबाईल-: 8872300508, 9501062606, व्हाटस्एप पर फोटो सहित अन्य जानकारी भेंजे।

गायत्री महायज्ञ एवं श्रीराम कथा सम्पन्न

स्त्री आर्य समाज मॉडल टाऊन जालन्धर में दिनांक 18 मार्च से 26 मार्च तक नौ दिन तक गायत्री महायज्ञ एवं श्रीराम कथा का आयोजन किया गया। प्रतिदिन दोपहर 3:30 से 5:30 बजे तक यह कार्यक्रम निरन्तर चलता रहा। परम पावन गायत्री महामन्त्र के द्वारा आहुतियां प्रदान की गई। भारी संख्या में माताओं ने यजमान बनकर पुण्यार्जित किया। यज्ञ के ब्रह्मा पं. सत्यप्रकाश जी शास्त्री तथा पं. बुद्धदेव जी वेदालंकार थे। प्रतिदिन प्रसाद की व्यवस्था श्री सुदर्शन शर्मा जी के परिवार की ओर से उनकी धर्मपत्नी श्रीमती गुलशन शर्मा जी द्वारा की गई। इस अवसर पर श्री राजेश अमर प्रेमी तथा श्रीमती रश्मि घई के मधुर भजन होते रहे। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के विद्वान् श्री सुरेश शास्त्री जी ने मर्यादापुरूषोत्तम श्रीराम जी के जीवन पर प्रकाश ड़ाला। उन्होंने कहा कि वर्तमान में रामायण की शिक्षाओं पर चलने की आवश्यकता है। अगर हमें अपनी संस्कृति सभ्यता को बचाना है तो रामायण के आदर्शों को अपनाना होगा। यह सारा कार्यक्रम स्त्री आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती सुशीला भगत जी की अध्यक्षता में चलता रहा। श्रीमती सुशीला भगत जी ने अपने सम्बोधन में सभी का हार्दिक धन्यवाद करते हुए कहा कि स्त्री आर्य समाज द्वारा इस प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन इसी प्रकार किया जाता रहेगा। इस कार्यक्रम की सफलता के लिए सभी बहनों का सहयोग प्राप्त हुआ है। मर्यादापुरूषोत्तम श्रीराम हम सबके आदर्श हैं। इसलिए ऐसे कार्यक्रम हमें एक नई ऊर्जा व प्रेरणा देते हैं। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में श्रीमती रजनी सेठी, दमयन्ती सेठी, नीरू कपूर, कमलेश सेठी, प्रोमिला अरोड़ा, गुलशन शर्मा, ज्योति शर्मा आदि ने पूरा सहयोग दिया।

नीरू कपूर संयुक्त मन्त्राणी स्त्री आर्य समाज

वेद विज्ञान सम्मेलन

दयानन्द मठ दीनानगर में सन्त शिरोमणि पूज्य गुरूवर स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के 118वें जन्मोत्सव को समर्पित वेद विज्ञान सम्मेलन दिनाँक 11 अप्रैल से 13 अप्रैल 2018 तक बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। इससे पूर्व 1 अप्रैल से 11 अप्रैल तक दयानन्द मठ के अध्यक्ष स्वामी सदानन्द जी की अध्यक्षता में निरन्तर क्षेत्रों में आर्य जगतके विभिन्न प्रान्तों से आए हुए सन्यासियों, भजनोपदेशकों द्वारा वेद प्रचार यात्रा होगी। आप सभी इस अवसर पर सादर आमन्त्रित हैं।

-स्वामी सदानन्द अध्यक्ष दयानन्द मठ दीनानगर

वार्षिक पुस्तक वितरण समारोह

यश चौधरी आर्य माडल स्कूल में प्रिंसीपल मोनिका वाट्स के नेतृत्त्व में वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर आर्यसमाज धूरी के चेयरमैन श्री श्याम आर्य जी, आर्य समाज के प्रधान श्री वीरेन्द्र कुमार जी, यश चौधरी आर्य माडल स्कूल के प्रधान श्री सोम प्रकाश आर्य जी, मैनेजर श्री सतीश पाल आर्य जी विशेष तौर पर बच्चों को आशीर्वाद देने के लिए उपस्थित रहे। इनके अलावा उप-प्रधान प्रहलाद कुमार आर्य जी, श्रीमती आरती तलवाड़ जी, श्री पवन कुमार जी, श्री वासुदेव आर्य जी, श्री राजीव मोहिल जी, श्री अनिल कुमार जी, प्रिंसीपल बी. एल. कालिया, प्रिंसीपल निशा मित्तल, प्रिंसीपल रीचा, श्री शेलेस् कुमार शास्त्री, प्रधान स्त्री आर्य समाज श्री मती उर्मिला जी भी विशेष तौर पर उपस्थित रहे। समारोह को शुरूआत गायत्री मंत्र से की गई। इसके बाद प्रिंसीपल मोनिका वाट्स ने आए हुए मेहमानों और अभिभावकों का स्वागत किया तथा स्कूल की वार्षिक रिपोर्ट पढ़ी। स्कूल के विद्यार्थियों द्वारा बहुत ही सुसंस्कृतिक सुन्दर रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। श्री सोम प्रकाश जी ने आए हुए मेहमानों का विशेष तौर पर समूह कमेटी को और से स्वागत किया और अभिभावकों को स्कूल की गतिविधियों से अवगत करवाया। इसके पश्चात् शिक्षा क्षेत्र में प्रथम, द्वितीय, तथा तृतीय स्थान हासिल करने वाले विद्यार्थियों को ट्राफीयां से पुरस्कृत किया गया। स्कूल के समूह स्टाफ के सहयोग से यह कार्यक्रम सफल रहा।

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। **E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org**
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।